# आचार्य अमितगति (द्वितीय)

**जीवन-परिचय :** आचार्य अमितगति माथुर संघ के आचार्य थे। यह संघ काष्ठासंघ की एक शाखा है। इस संघ की उत्पत्ति वीरसेन के शिष्य कुमारसेन द्वारा हुई है।

अमितगति द्वितीय ने धर्मपरीक्षा ग्रन्थ में जो प्रशस्ति दी है, उसके अनुसार इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है—आचार्य वीरसेन के शिष्य देवसेन, देवसेन के शिष्य अमितगति प्रथम, इनके शिष्य नेमिषेण, नेमिषेण के शिष्य माधवसेन और माधवसेन के शिष्य अमितगति (द्वितीय) हुए हैं।

आचार्य अमितगति (द्वितीय) बहुश्रुत विद्वान थे। उन्होंने विविध विषयों पर ग्रन्थों का निर्माण किया है जिससे ज्ञात होता है कि ये काव्य, न्याय, व्याकरण, आचारप्रभृति आदि अनेक विषयों के विद्वान थे। आपकी कविता सरल और वस्तुतत्त्व की विवेचना करने वाली है।

अमितगति आचार्य के द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर इनका समय विक्रम संवत् की 11वीं शताब्दी है।

**रचना-परिचय :** आचार्य द्वारा लिखित निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

**1. सुभाषितरत्नसंदोह :** सुभाषितरत्नसन्दोह सुभाषित रूपी रत्नों का भंडार है। कवि ने सुभाषित लिखने का उद्देश्य बताते हुए लिखा है कि—ये सुभाषित श्लोक चेतन-अचेतन मन के अज्ञान को दूर कर भक्तों के हृदय को प्रसन्न करते हैं। जिस प्रकार सूर्य की किरणें अन्धकार का नाश कर समस्त पदार्थों को प्रकाशित करती हैं। यह ग्रन्थ विक्रम संवत् 1050 में पौष सुदी पंचमी को समाप्त हुआ है। इसमें 922 पद्य हैं। सभी पद्य सुन्दर सूक्तियों से विभूषित हैं और याद करने योग्य हैं।

**2. धर्मपरीक्षा :** संस्कृत-साहित्य में यह अपने ढंग की अद्भुत व्यंग्यप्रधान रचना है। इसमें पौराणिक ऊटपटांग कथाओं और मान्यताओं को बड़े ही मनोरंजक रूप में अविश्वसनीय सिद्ध किया है। समूचा ग्रन्थ 1945 श्लोकों में सुन्दर कथा

के रूप में निबद्ध है। इसे कवि ने दो महीने में ही बनाया था।

**3. पंचसंग्रह :** यह प्राकृत पंचसंग्रह ग्रन्थ का अनुवाद जैसा है। इसमें कुल 1375 पद्य हैं। इसकी रचना कवि ने विक्रम संवत् 1073 में की है।

**4. उपासकाचार :** यह अमितगति-श्रावकाचार के नाम से प्रसिद्ध है। उपलब्ध श्रावकाचारों में यह ग्रन्थ बहुत विशद, सुगम और विस्तृत है। इसमें 1352 पद्य और 15 अध्याय हैं।

**5. आराधना :** शिवार्य द्वारा रचित प्राकृत आराधना ग्रन्थ का यह संस्कृत रूपान्तर है। कवि ने इस रूपान्तर को चार महीने में ही पूर्ण किया है। इसमें दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप—इन चारों आराधनाओं का प्राकृत आराधना के समान ही वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में देवसेन से लेकर अमितगति तक की गुरुपरम्परा भी दी गयी है।

**6. भावना द्वात्रिंशतिका :** यह 32 पद्यों का एक छोटा-सा प्रकरण है। इसे सामायिक पाठ भी कहा जाता है। इसकी कविता बड़ी सुन्दर और कोमल है। इसे पढ़ने से बड़ी शान्ति मिलती है। इसका हिन्दी-अँग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। बहुत से लोग सामायिक के समय इसका पाठ करते हैं। हृदय को पवित्र बनाने के लिए एक अच्छा काव्य है। इसको पढ़ने से पवित्र और उच्च भावनाओं का संचार होता है।

**7. तत्त्व भावना :** यह 120 पद्यों का छोटा-सा प्रकरण है। यह ग्रन्थ सूरत से प्रकाशित है।